International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(7): 07-08
Received: 05-05-2023
Accepted: 09-06-2023

डॉ. रामखिलाड़ी माली
स्वतंत्र कलाकार एवं कला अध्येता, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रामखिलाड़ी माली
स्वतंत्र कलाकार एवं कला अध्येता, जयपुर, राजस्थान, भारत

अमूर्तकला– एक विवेचन

डॉ. रामखिलाड़ी माली

सारांश
19वीं सदी में हुए यूरोपीय विकास एवं राजनीतिक व सामाजिक उथल–पुथल ने कलाकरो को भी स्वतंत्र विचार से सर्जन करने को प्रेरित किया जिनमें एक प्रवाह वस्तुनिरपेक्ष कला का था।
समाज में सामान्य अवधारणा यह है कि जो समझ नहीं आये वह मार्डन है, जो समझ न आये वह अमूर्त है। समाज की यह धारण पूर्णरूप से सही भी हो सकती क्योंकि कलाकार जिस स्तर के विचारों या भावों को प्रकट करने का काम करता है, जरूरी नहीं कि उन विचारों को समाज आसानी से आत्मसात कर सके। क्योंकि अमूर्त कला में रंगों, रेखाओं या आकारों द्वारा ही कलाकार अज्ञात को ज्ञात करने का प्रयत्न कता है।

कुटशब्दः अज्ञात, कुतुहल, प्रतिबिम्बित, अभियंत्रित, चेष्टा, अवलोकनार्थ बुद्धिजीवी।

प्रस्तावना
वर्तमान में जिस कला –शैली व कला आन्दोलन ने संसार की पूरी पीढ़ी को अपने अंतस में झाककर शुद्ध व्यक्तिय शैली में कार्य करने को प्रेरित किया वह अमूर्त कला के नाम से जानी जाती है। अमर्त कला, कलाकारो के लिए एक बड़ा आन्दोलन है। सृजन का यह आन्दोलन है, अज्ञात को जानने का जो नहीं हैं उसे प्रकट करने का वो भी बिना किसी बनावटी भाषा के केवल रंग और रेखाओं द्वारा सभी मानवीय भावों को प्रकट करने का इन सबको समाज ने मान्यता दी भी हैं क्योंकि कला दीर्घाओं में होने वाली प्रदृर्शनियों में अमूर्त कला चर्चा का विषय रही है। भारतीय कला परिदृश्य को देखने पर मालूम होता है कि अमूर्तवादि चित्रकारों की कला को मान्यता न केवल भारत अपितु विदेशों में भी होती है।
दर्शक को नगण्य समझने की कलाकारो की प्रवृति तर्क शुद्ध नहीं है कलाकृति जब दर्शक के अवलोकनार्थ रखी जाती है तो स्वाभाविक है कि वह उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए रखी जाती है। अतः दर्शक को अस्तित्वहीन कैसे माना जा सकता है? क्या हम उसको झूठ समझकर उसकी मौन सहमती चाहते है? इसमें कला का श्रेष्ठतव कैसे सिद्ध हो सकता है? सर्वसाधारण दर्शक की मनोवृति नये रूप के प्रति सन्देहग्रत रहती है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं होता कि उसमें सौन्दर्य दृष्टि या रस गृहण–क्षमता का अभाव है। दर्शक हमेशा नई कलाकृति को अपनी पूर्व कल्पना से अपने जीवन से सम्बन्धित देखना चाहता है और उसकी यह प्रवृति मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार है। किसी भी नये विचार या कार्य का स्वीकार परीक्षण के बिना कैसे किया जा सकता है मनोहर रंग संगति व रचना के प्रति दर्शक उदासीन नहीं होता, किन्तु रंगो व आकारो की रचना को विशुद्ध रूप में गृहण करने में उसको कठिनाई होती है क्योंकि किसी भी कृति को जीवन से पृथक रूप में देखने का वह आदि नहीं होता हैं न वह समझता है कि उसका कुछ प्रयोजन है आधुनिक वस्तुनिरपेक्ष कृतियों की और उदासीन व्यक्ति अपने वस्त्रों, गृहों व दैनिक उपयोग की वस्तुओं को आधुनिक रूप से पसन्द करता है। हर कोई परिवर्तन चाहता है व यह एक स्वाभाविक मानव प्रवृति है, किन्तु उसकी मनीषा होती है कि उस परिवर्तन पर निजी कल्पना व व्यक्तित्व की छाप हो इस द्विघा मनःस्थिति से बाहर निकलने का कार्य समाज मनोविज्ञान, परिचय, साहचर्य व सम के तत्व करते है व अन्त में सच्ची कला दर्शक स्वीकृत कर लेता है।
असल में वस्तु निरपेक्ष कलाकृति से आनन्द उठाने के लिये हमको उसे स्वतंत्र कलाकृति के रूप में देखना चाहिये। उससे सादृश्य, विचार, जागृति उपयोग या संदेश की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। सही मायने में वस्तुनिरपेक्ष या अमूर्तकला स्वतंत्र कला है उसमें किसी विषय वस्तु को खोजना या कोई कहानी तलाश करना अथवा अपने आपसे सम्बन्ध बनाना नितांत गलत है।
क्योंकि उसके विचार अमूर्त है। जो समझ में आना इतना ही मुश्किल है जितना किसी वृक्ष को देखने के बाद उसके बिज को देखना। कलाकार अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से सोचता है इसलिए वह अनजाने से लगते लगते हैं अमूर्त कला में कलाकार अपने आकारों में कलात्मक रंगों की अभिव्यक्ति करता हैं उसके आकार भी यहीं के बनाये हुए है। रंग भी यही के है।
अमूर्त कला भी इसी समाज की देन है। इसी समाज की कलाकरो की कृति है। अगर समाज कला को जानता है उसे पसन्द करता है तो निश्चित ही वह अमूर्त कला को भी समझने का प्रयत्न करता है। क्योंकि किसी भी नये विचारो को ग्रहण करने में कठिनाई होती है।

उसे समय की कसौटी पर खरा उतरना होता है। वर्तमान समय अमूर्त कला का भी समय है। अन्य कला शैलियों या समसामियीक कला शैलियों में अमूर्त कला भी समय के साथ विकास की ओर अग्रसर हुई है।

उन्नीसवीं सदी में हुए यूरोपीय औद्योगिक विकास वैज्ञानिक क्रांन्ति एवं राजनीतिक व सामाजिक उथल–पुथल ने कलाकरो को भी स्वतंत्र विचार से सर्जन करने को प्रेरित किया व मुख्यतया इसके परिणामस्वरूप कलाकरो के नयी दिशाओं में उठाये गये कदमों के भिन्न नये कला प्रवाहों को जन्म दिया जिनमें एक प्रवाह वस्तुनिरपेक्ष कला का था। जिसे वर्तमान में अमूर्त कला के नाम से भी जाना जाता है।

अमूर्त कला भी सृजन ही है, अज्ञात सृजन किसी विषय वस्तु, कहानी, आदि के चित्रण में जितनी सृजन सम्भावनाऐं होती हैं शायद अमूर्त कला में उनसे कम नहीं होती। यहां किसी कला शैली की तुलना नहीं की जा रही, बल्कि बिना किसी विषय वस्तु के रचना करना और उसे किसी अन्य के भावों को प्रभावित करने की शक्ति उसमें उत्पन्न करना आसान काम नहीं। अमूर्त कला ग्रुगे के गुड खाने के समान है उसे गुड का स्वाद तो है। पर उसकी व्याख्या करना मुश्किल।

एक कलाकार के लिए ये आसान नहीं कि वह अपनी कला द्वारा आपको प्रभावित करे, वह भी बिना बोले, बिना कहे, बिना लिखे बिना स्वयं के, केवल रेखा और एक रंग के। इसके पिछे एक विचार होता है, उसे आप तक लाने की एक प्रक्रिया होती हैं रंग एक माध्यम होता है अपनी बात कहने का।

वर्तमान अमूर्त कला को समाज समझता है। उसकी अवधारणाएँ अनग–अलग हो सकती है परन्तु अमूर्तकला में छिपा सौन्दर्य बोध सामाजिक आकारो से लगने वाले रूप वे सभी सामाजिक विचारो के समिप ही तो है। कहते है कला समाज का दर्पण होती है अमूर्त कला भी तो समाज से ही उपजी है यहाँ के विभिन्न प्रकार के रंग विभिन्न आकारो की वस्तुएं सम्पूर्ण सृष्टि में उतार–चढ़ाव, ऊचाई, लम्बाई चौड़ाई एवं गहराई आदि के विचारो से कलाकार निश्चित रूप से कलाकार प्रभावित होता होगा। साथ ही सम्पूर्ण बह्माण्ड में मौजूद अनेको प्रकार के टेक्सचर ये सभी तो अमूर्त कला के लिए सहायक रहे होंगे इन्हीं को नये विचारो के साथ कलाकार ने उकेरा होगा।

अमूर्तकला के विचार को बुद्धिजीवी वर्ग जल्दी पढ़ सकताहै, क्योंकि अमूर्त कला का जन्म नई बात हो सकती है परन्तु वह हमारे साथ हमेशा से मौजुद रही है बस उसे हम अलग दष्टि से देखने का प्रयास नहीं करते। अमूर्त कला हमारे ज्ञान कोश का पहला अक्षर थी। क्योंकि आदिकाल में चित्र बने उसी से चित्रलिपि बनी। हमारे शब्दों का पहला स्वर भी हमारी आवाजो में पहली ध्वनी थी, अमूर्त कला।

अमूर्त कला में कलाकार रंगों, रेखाओं या अकारों द्वारा ही अज्ञात को ज्ञात करने का प्रयत्न करता हैं क्योंकि ज्ञात को प्रकट करने से तो सामान्य विषयवस्तु को ही प्रकट किया जा सकता, जबकि कलाकार तो सामान्य सोच या विचार से ऊपर सोचता है।

कलाओं की उत्पत्ति आदिम अवस्था में आत्मभिव्यक्ति, अलंकरण, प्रियता, प्रकृति की शक्तियों की उपसना, कुतुहल मनोरंजन आदि किसी एक या समस्त प्रवृतियों में से हुई होगी। आज यह स्थिर करना बहुत कठिन होता है, कि इनमें से कौनसी प्रवृति सर्वप्रथम कलाकृतियों के निर्माण में सहायक हुई थी, केवल ये कहा जा सकता हैं, कि आदिम मनुष्य आरम्भ में उसके क्रिया कलापों तथा कृत्तियों में से अनेक कलाओं की पृष्ठभूमि बन चुके थे। उसने मन ही मन में प्रकृति की शक्तियों के अनुसार सुन्दर अथवा भयंकर रूप कल्पित कर लिये थे और इन्हें पर्वतों, वृक्षों, पशुओं तथा पक्षियों आदि से सम्बन्धित अनुमानित किया था। इस प्रकार उसकी आरम्भिक विम्बयोजना जन्म ले चुकी थी। जो आगे चलकर कलाकृतियों में प्रतिबिम्बित हुई, इससे पूर्व वह इन रूपों की मूक अभिव्यक्ति करता रहा होगा, केवल मन में या केवल नेत्रों से या केवल अभियान्त्रित और अस्पष्ट सी चेष्टाओं तथा ध्वनियों से। अथवा ये अनुंभूतियां उसके मन में संचित और घनी –भूत होती रही। और सर्वप्रथम उसकी इन घनी–भूत अभिव्यक्तियों का विस्फोट हुआ होगा। उसकी शारीरिक क्रिया –शीलता में अचानक बार–बार चिखने या किसी प्रकार की ध्वनि करने में बार–बार उछलने में कूदने अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक बार–बार दौडने अथवा चक्कर लगाने में अपने समूह के अन्य साथियों सहित एक साथ कोई आवाज या शोर करने में या फिर पूरे समूह द्वारा एक साथ उछलने–कूदने तथा साथ ही किसी प्रकार की ध्वनि करते जाने में आदि–आदि अनेक कारण हो सकते है। कदराओं, चट्टानों गुफाओं आदि में अनेकों अज्ञात, प्रतीक चिन्ह या चित्र उकेरे होगे जिसमें अमूर्त तत्व भी समाहित रहे होगें।

सन्दर्भ

1. साखलकर र.वि. ''कला के अनतःदर्शन राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकादमी
2. ब्लूम फील्ड लियोनार्ड ''अनुवाद सत्य चिपन वर्मा'' भाषा की उत्पत्ति मासिक सरस्वती
3. किरण डॉ. जयसिंह ''कला का सृजनात्मक संसार''
4. वर्मा अविकाश बहादूर ''भारतीय चित्रकला का इतिहास'' प्रकाश बुक डिपो बरेली
5. सिन्हा डॉ अनिल ''आदमी के लिए कला'' कला दीर्घा उत्कर्ष प्रतिष्ठान लखनऊ
6. साखलकर र.वि. ''आधुनिक चित्रकला का इतिहास '' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
7. अशोक ''पश्चिम की चित्रकला'' ललित कला प्रकाशन अलीगढ़
8. शेष हेमन्त ''भारतीय कला''
9. स्वामी ई. कुमारिल ''भारतीय कला और कलाकार''
10. उपाध्याय, विद्यानागर '' भारतीय कला की कहानी'' द स्टूडेन्ट्स बुक कम्पनी जयपुर।